

# चुस्किट का पहला स्कूल!

सुजाता पद्मानाभन

**CHUSKIT GOES TO SCHOOL**

Sujatha Padmanabhan



# चुस्कट का पहला स्कूल!

सुजाता पद्मानाभन



**CHUSKIT GOES TO SCHOOL**

Sujatha Padmanabhan

## नव जनवाचन आंदोलन

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने  
'सर दोराबजी टाटा ट्रस्ट' के सहयोग से किया है।  
इस आंदोलन का मकसद आम जनता में  
पठन-पाठन संस्कृति विकसित करना है।



चुस्किट का पहला स्कूल!  
सुजाता पद्मानाभन

Chuskit Goes to School  
Sujatha Padmanabhan

हिंदी अनुवाद  
अरविंद गुप्ता

Hindi Translation  
Arvind Gupta

कॉपी संपादक  
राधेश्याम मंगोलपुरी

Copy Editor  
Radheshyam Mangolpuri

रेखांकन  
(मधुवती अनंतराजन के मूल चित्रों पर आधारित)  
ज्योति हिरेमठ

Illustration  
(Based on original Illustrations by Madhuvanti Anantharajan)  
Jyoti Hiremath

ग्राफिक्स  
अभय कुमार झा

Graphics  
Abhay Kumar Jha

कवर  
गॉडफ्रे दस

Cover  
Godfrey Das

प्रथम संस्करण  
अक्टूबर 2007

First Edition  
October 2007

सहयोग राशि  
15 रुपये

Contributory Price  
Rs. 15.00

मुद्रण  
सन साइन ऑफसेट  
नई दिल्ली - 110 018

Printing  
Sun Shine Offset  
New Delhi - 110 018

Publication and Distribution

**Bharat Gyan Vigyan Samiti**

Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block, Saket, New Delhi - 110017

Phone : 011 - 26569943, Fax : 91 - 011 - 26569773

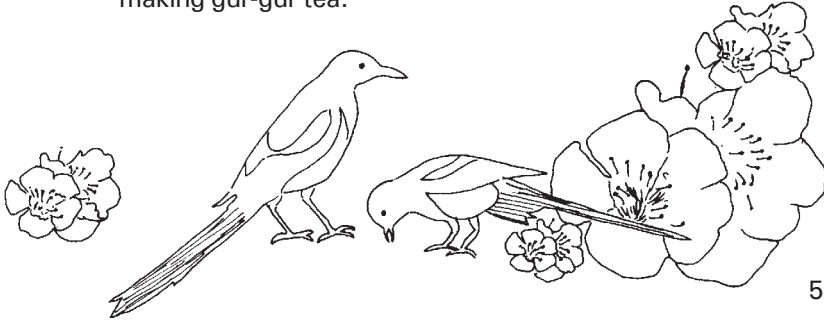
Email : bgvs\_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com

BGVS OCT 2007 2K 1500 NJVA 0044/2007



उस दिन चुस्कट सुबह जल्दी उठ गई। उसके लिए वह दिन बहुत खास था। वह इतनी खुश थी कि रात को सो भी न सकी। उसने अपने पलंग के पास की खिड़की के बाहर उत्सुकता से झांका। वसंत का मौसम था और लद्दाख में खुमानी के पेड़ फूलों से लदे थे। दो मैगपाई पक्षी सुबह से ही कीड़े पकड़ने में लग गए थे। उसकी आम-ले (मां) भी उठ चुकी थीं। वह किचिन में गुर-गुर चाय बना रही थीं। चुस्कट को उनकी आवाज साफ सुनाई दे रही थी।

Chuskit woke up early that morning. It was a very special day and she was too excited to sleep. She eagerly looked out of the room through the window next to her bed. It was spring time in Ladakh and the apricot trees were in full bloom. Two magpies had already begun their day and were busy looking for insects to eat. Her Ama-ley was awake too. She could hear her in the kitchen, making gur-gur tea.



चुस्कट को उठे एक घंटा हो चुका था। आज का दिन उसके लिए यादगार दिन था। बहुत दिनों तक वह उसे याद रखेगी। क्यों? क्या तुम्हें पता है?

नहीं, आज लोसर त्यौहार भी नहीं था— जिस दिन साल का नया दिन मनाया जाता है। लोसर तो कई महीनों बाद आएगा।

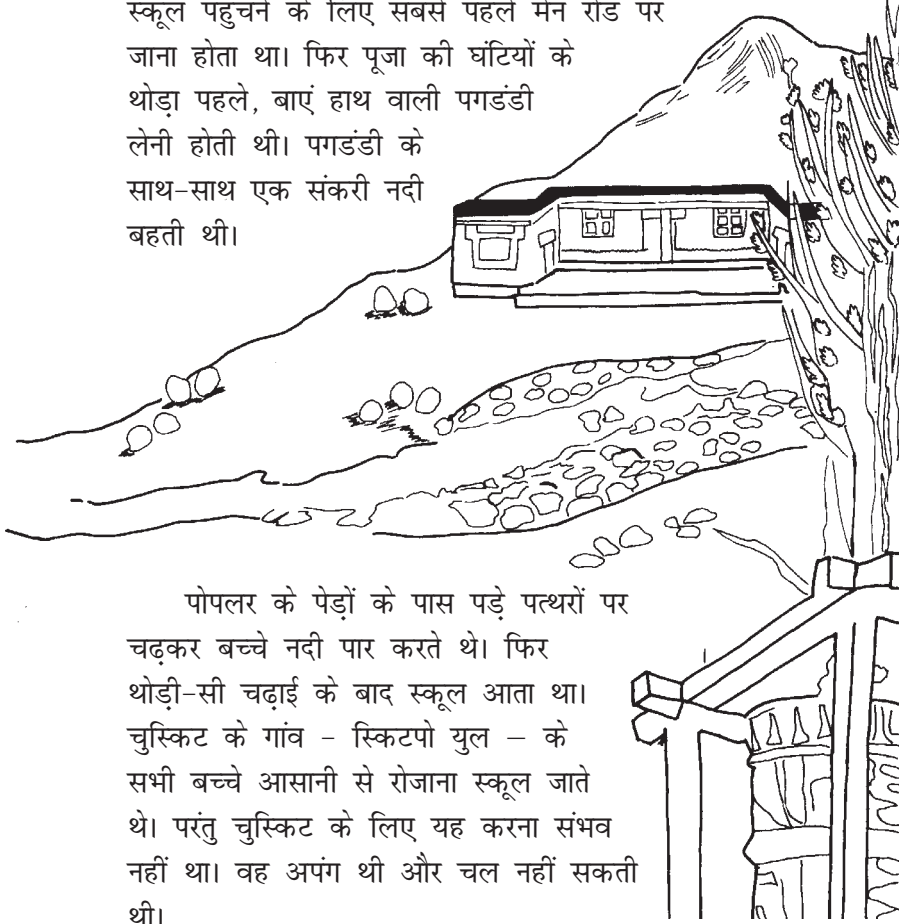
न ही इस दिन गांव के मंदिर में कोई गोंपा जैसा विशेष पर्व या कोई शादी-ब्याह था।

आज स्कूल में चुस्कट का पहला दिन था। इस दिन का वह बेसब्री से नौ साल से इंतजार कर रही थी।



Chuskit had been awake for the last hour. This was the day she was going to remember for a long time. Can you guess why? No, it was not Losar, the New Year festival. That was many months away. Nor was it any special day in her village, like the gonpa festival, or a wedding day. Today was going to be Chuskit's first day at school. At nine years, she had waited a long-long time for this.

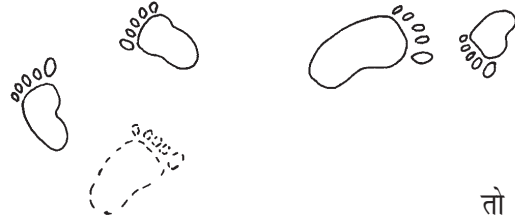
चुस्किट के घर से वैसे स्कूल बहुत दूर नहीं था।  
स्कूल पहुंचने के लिए सबसे पहले मेन रोड पर  
जाना होता था। फिर पूजा की घंटियों के  
थोड़ा पहले, बाएं हाथ वाली पगडंडी  
लेनी होती थी। पगडंडी के  
साथ-साथ एक संकरी नदी  
बहती थी।



पोपलर के पेड़ों के पास पड़े पत्थरों पर  
चढ़कर बच्चे नदी पार करते थे। फिर  
थोड़ी-सी चढ़ाई के बाद स्कूल आता था।  
चुस्किट के गांव - स्किटपो युल - के  
सभी बच्चे आसानी से रोजाना स्कूल जाते  
थे। परंतु चुस्किट के लिए यह करना संभव  
नहीं था। वह अपंग थी और चल नहीं सकती  
थी।

The school was not very far away from her home. To get there, you had to walk up to the main road. Just before the prayer wheel, you took the path to the left of the road that ran along a narrow stream.

Near the poplar trees you crossed the stream by jumping over the big rocks. Once you got to the other side, a short walk up a slope took you to the school. All the children of Skitpo Yul, Chuskit's village, walked to school everyday and with ease. But not little Chuskit. She had a disability and could not walk.



चुस्कट का जब जन्म हुआ तो उसके पैर सामान्य बच्चों जैसे नहीं थे। उसके पिता उसे गांव की दाई (आमची) के पास और फिर लेह में डॉक्टरों के पास लेकर गए। परंतु बहुत दवाइयां करने के बाद भी चुस्कट चल न पाई। पहले चुस्कट को अपने और अन्य बच्चों, खासकर अपने छोटे भाई स्टोबडॉन, के बीच अंतर समझ में नहीं आया। पर धीरे-धीरे उसने पाया कि कई काम, जिन्हें वे आसानी से कर सकते थे, उसके लिए काफी मुश्किल थे।

Chuskit was born with legs that did not work like everyone else's. Her father had taken her to the village Amchi and then to the doctors in Leh. But no amount of medicine had helped her walk. At first, Chuskit did not realize that she was in any way different from Stobdan her younger brother, or her cousins. But soon there were many things she could not do as easily as them.





जब कभी चुस्कट उदास होती तो उसके पिता उसकी हिम्मत बढ़ाने के लिए कहते, “इससे क्या फर्क पड़ता है। तुम बाकी बच्चों से बेहतर सिलाई करती हो और तुम बहुत सुंदर चित्र बनाती हो।”

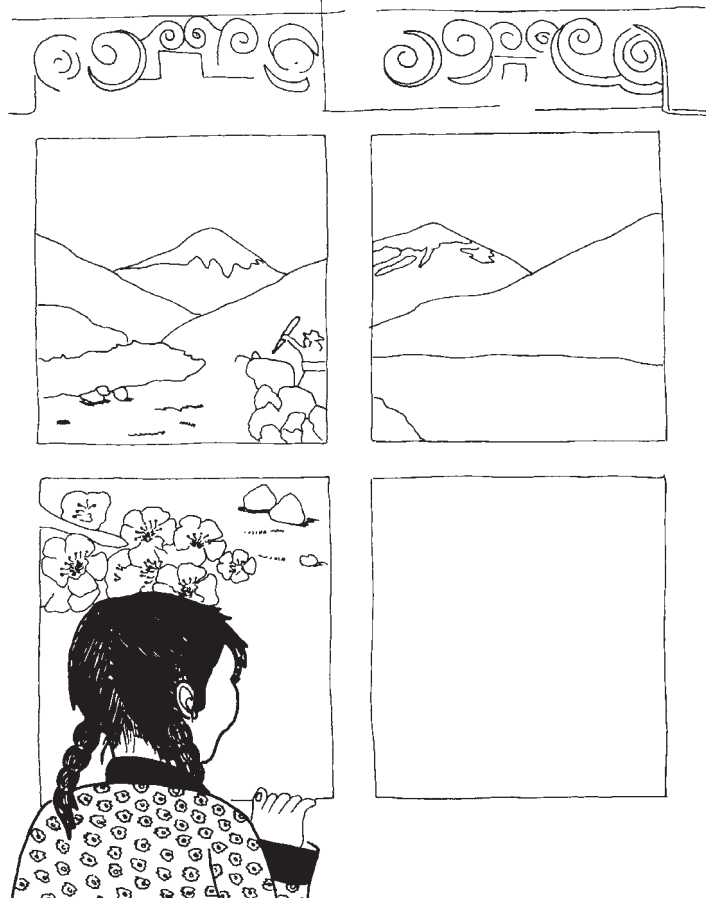
अक्सर चुस्कट के पिता उसके लिए लेह से रंगीन पेंसिलें लाते थे।



“This does not matter,” her Aba-ley would tell her whenever she fell sad. “You can stitch better than any one of them. And you draw very well.” Aba-ley often brought her some colour pencils from Leh.



हर रोज जब चुस्कट की मां खाना पकातीं तब वह किचिन की खिड़की में बैठकर बाहर के चित्र बनाती। हर रोज उसके परिवार के जानवरों को बाहर चारागाह में ले जाया जाता। उसे बाहर झरनों का निर्मल नीला पानी दिखाई देता। और अगर घर में कोई मेहमान आता तो चुस्कट को ही सबसे पहले उसकी खबर लगती!



Chuskit would sit at the kitchen window everyday and draw what she saw while her Ama-ley cooked. She could see her family's animals being taken to graze every morning. She could see the blue waters of the stream that flowed near by. And she would be the first one to announce the arrival of a visitor to their house!

इधर-उधर आने-जाने के लिए चुस्कट पहियों वाली कुर्सी का उपयोग करती थी। बड़े लोग इसे 'व्हीलचेयर' कहते हैं। आप हाथ से पहिये घुमाकर इसे किसी भी दिशा में चला सकते थे - आगे, बाएं, दाएं और पीछे भी। लेकिन खुद के भार और व्हीलचेयर के वजन को खींचने के लिए बाजुओं का ताकतवर होना जरूरी था।

जब चुस्कट के पिता व्हीलचेयर पहली बार घर लाए तो परिवार के सभी लोग बहुत उत्साहित हुए।

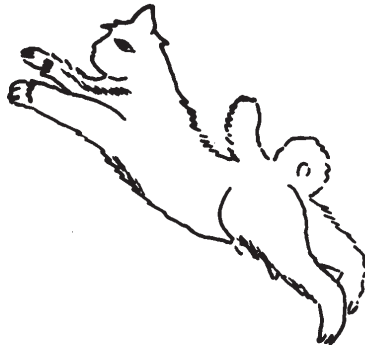


Chuskit used a chair fitted with wheels to move around. Elders called it a "wheelchair." You could move it in any direction - forward, left, right, and even backward - by moving the wheels with your hands. You only needed to have really strong arms to push the weight of your body and the chair.

When Aba-ley first brought the wheelchair home, everyone in her family was very excited.

“अब मुझे चुस्कट को गोदी लेकर नहीं घूमना पड़ेगा। अब मैं उसे व्हीलचेयर पर घुमा सकूंगा,” कहते-कहते उनकी आंखों में खुशी के आंसू छलक आए। “और मैं अब जहां भी चाहूं सैर कर सकूंगी!” चुस्कट खुशी से चिल्लाई।

“क्या मैं सिर्फ एक बार तुम्हारी व्हीलचेयर पर सवारी कर सकता हूं?” स्टोबडॉन ने भीख मांगते हुए कहा। वह भी व्हीलचेयर को चलाना चाहता था। उसमें उसे बड़ा मजा आएगा।



“Now I won't have to carry Chuskit everywhere, I can wheel her around,” said Ama-ley, with tears of happiness in her eyes. “And I will be able to go wherever I want!” cried Chuskit excitedly.

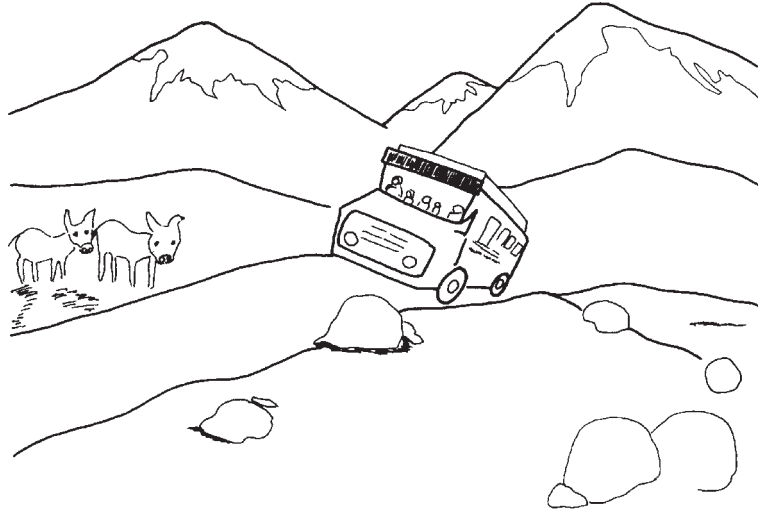
“Please, please, could I ride on your wheelchair once in a way?” begged Stobdan. He wanted to wheel it around too. It looked like fun.



मोटी और काली बिल्ली ने मौके का फायदा उठाया और वह झट से कूदकर व्हीलचेयर की सीट पर लेट गई। “सचमुच जिस बोरे पर मैं सोती हूँ उससे यह व्हीलचेयर कहीं ज्यादा आरामदेह है,” उसने गुर्राते हुए कहा।

Billa, the big cat, jumped on to the wheelchair and stretched across the seat. “Yes, this is far more comfortable than the sack cloth I slept on,” she purred.

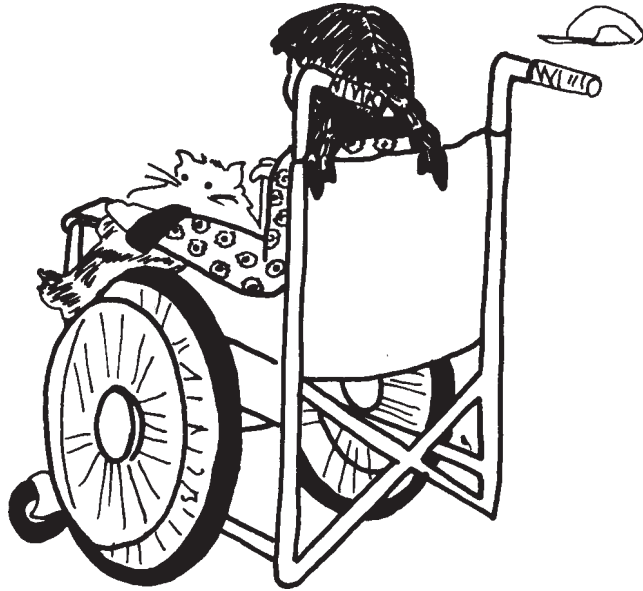
धीरे-धीरे चुस्कट ने व्हीलचेयर का उपयोग करना सीखा। हर शाम चुस्कट की मां घर के बाहर उसे व्हीलचेयर की सीट पर बिठातीं। वहां से चुस्कट बच्चों को स्कूल से वापस आते हुए देखती। अक्सर वे ग्रुप में हंसते-खिलखिलाते हुए आते।



Slowly, Chuskit learnt to use her wheelchair. She would ask her mother to seat her in the wheelchair outside her home every evening. From here she would watch children returning from school, chattering and laughing merrily in groups.

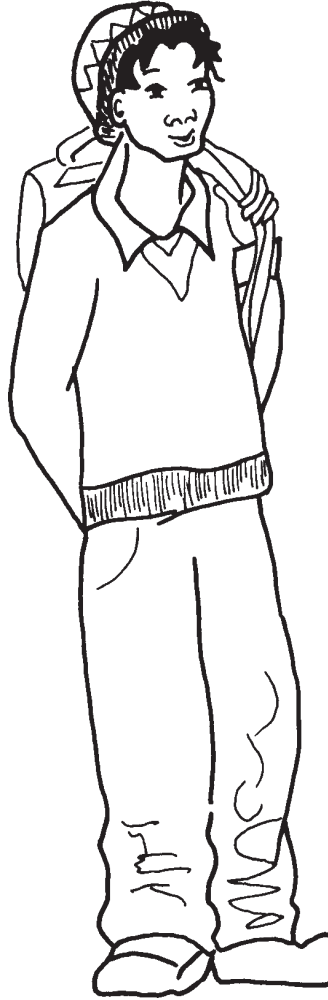
फिर कुछ देर बाद शाम की बस लेह से वापस आती। लोग बाजार-हाट करके उसमें वापस आते। चुस्कट को किचिन की खिड़की की तुलना में यहां बहुत ज्यादा मजा आता!

In a while, the evening bus would return from Leh, bringing back people from work and the market place. How much more exciting the world was from here than from the kitchen window!



एक शाम जब चुस्कट अपने दादाजी के साथ घर के बाहर बैठी थी, तभी एक छोटा लड़का उसके पास आया। उसने चुस्कट के दादाजी को एक पत्र दिया। “नमस्ते (जुलै)! ड्राइवर ने मुझे इस चिट्ठी को आपको देने के लिए कहा है,” उसने कहा।

“मेरा नाम अब्दुल है,” उसने चुस्कट की ओर देखते हुए कहा। “मैं गवर्नमेंट स्कूल में छठी कक्षा में पढ़ता हूँ। तुम स्कूल क्यों नहीं आती हो? मैं अक्सर इस बारे में सोचता हूँ।”



One evening when Chuskit was sitting outside the house with her grandfather, a young boy came up to her. He carried a letter which he handed over to the grandfather. “Julley! The bus driver asked me to give this to you,” he said.

“My name is Abdul,” he said turning to Chuskit. “I study in class 6 at the Government School. I have often wondered why you don’t come to school.”



“नमस्ते, अब्दुल,”  
चुस्कट ने जवाब दिया।  
“मैं कभी स्कूल गई ही  
नहीं। स्कूल जाने का रास्ता  
इतना ऊबड़-खाबड़ है कि  
उस पर मेरी व्हीलचेयर  
जरूर फंस जाएगी। और  
फिर मैं स्कूल के सामने  
वाली छोटी नदी को भी  
पार नहीं कर सकती। मुझे  
रोजाना स्कूल ले जाना  
और लाना, मेरे माता-पिता  
के लिए संभव नहीं होगा।”

“Julley Abdul,”  
said Chuskit. “I have  
never been to school.  
The path to the school  
is too uneven and  
pebbly and my  
wheelchair will get  
stuck. Besides, I  
cannot cross the little  
stream in front of the  
school. It would be  
difficult for my parents  
to carry me to school  
and back everyday.”



“पर क्या तुम स्कूल जाना चाहोगी?” अब्दुल ने पूछा।

“बिल्कुल!” चुस्कट ने तपाक से जवाब दिया। “मेरा भाई मुझे स्कूल की सारी कहानियां सुनाता है। मैं भी अन्य बच्चों जैसे ही पढ़ना, दोस्त बनाना, खेल खेलना, स्कूल की यूनीफार्म पहनना और परीक्षा में बैठना चाहती हूं। कभी-कभी मेरा भाई स्कूल में सीखे गाने गुनगुनाता है और उनमें मुझे बहुत मजा आता है। तुम शायद मेरी बात पर यकीन न करो, पर मुझे कई बार सपना आता है कि मैं अपने बस्ते के साथ स्कूल में हूं और टिफिन खा रही हूं।”



“But would you like to come to school?” asked Abdul.

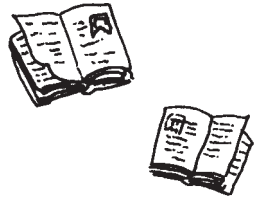
“Of course!” replied Chuskit. “I hear my younger brother talk of all that he does at school. I want to study like all of you, make friends, play games, wear a uniform, and even write exams. Sometimes my brother teaches me songs that he has learnt at school, and I love it. You may not believe this, but I sometimes dream of carrying a school bag, even eating packed lunch...”

“बहुत हो गया,”  
चुस्कट के दादाजी ने उसे  
समझाते हुए कहा। “ऐसे  
हवाई सपने देखना बंद करो।  
तुम्हें अच्छी तरह पता है  
कि तुम कभी स्कूल नहीं  
जा पाओगी। मैंने तुम्हें यह  
बात कई बार बताई है। तुम  
घर में रहकर जितना चाहो,  
सीखो।”



“Enough! Enough!”  
interrupted her grand-  
father. “Stop dreaming,  
Chuskit. You know you  
cannot go to school. I  
have told you this many  
times. Learn as much as  
you can at home.”





“दादाजी, कृपा करके,” चुस्कट ने दादाजी से विनती की। उसकी आंखों में आंसू भर आए। पर दादाजी गुस्से में वहां से चले गए। “मैं जो महसूस कर रही हूँ उसे दादाजी समझ नहीं पा रहे हैं,” चुस्कट ने कहा।

“मुझे वह दिन याद है जब मेरे भाई ने गर्व के साथ पहाड़े सुनाए और वह समय भी जब उसने पहली बार पढ़ना सीखा!

“Meme-ley, please,” pleaded Chuskit softly with tears in her eyes as her grandfather walked away angrily.

“Meme-ley does not understand how I feel,” said Chuskit.

“I remember the day my brother recited his tables with such pride, even the time he learned to read!

मेरे माता-पिता भी बहुत खुश हुए, क्योंकि उन्हें खुद कभी स्कूल जाने का मौका नहीं मिला था। मैं पढ़ने के साथ-साथ गणित भी सीखना चाहती हूँ। तुम क्या मेरी बात समझे?”

“हां,” अब्दुल ने कहा, “चुस्कट, मैं तुमसे मिलने दुबारा आऊंगा। अब मुझे जाना है। मेरी मां मेरा इंतजार कर रही होंगी। नमस्ते!”



My parents were very happy as they have never been to school. I too want to learn to read and do math. Do you understand?”

“I do,” said Abdul. “Chuskit, I will see you again. I must go now. My mother will be waiting for me. Julley!”

अगले दिन सुबह की प्रार्थना के बाद अब्दुल सीधा हेडमास्टर के कमरे में गया। “नमस्ते, हेडमास्टर साहब,” उसने कहा। “मैं अपने गांव की एक लड़की के बारे में आपसे कुछ बात करना चाहता हूँ। वह लड़की स्कूल नहीं जाती है। उसका नाम चुस्कित है। वह स्टोबडॉन की बहन है।”

“हां, ठीक है,” हेडमास्टर ने जवाब में कहा, “मैं उसे जानता हूँ। वह चल-फिर नहीं सकती है, क्यों ठीक है?”



“जी सर। वह घर में इधर-उधर घूमने के लिए व्हीलचेयर का प्रयोग करती है, परंतु वह स्कूल नहीं आ सकती है, क्योंकि उसके घर से स्कूल तक का रास्ता काफी ऊबड़-खाबड़ है। क्या हम किसी तरीके से उसकी कुछ मदद कर सकते हैं सर?”

The next day, Abdul went straight to the Headmaster's room after assembly. "Julley, Azhang-ley!" he said. "I want to talk to you about a girl from our village who does not go to school. Her name is Chuskit. She is Stobdan's sister."

"Oh yes," replied the Headmaster. "I know her. She is disabled, isn't she?"

"Yes, Azhang-ley. She uses a wheelchair to move around but cannot reach school, as the path from her home is too rough and uneven. I was wondering if we could do anything to help her, Azhang-ley. We could all get together and level the path and also build a small bridge across the stream."

हम सब लोग मिलकर रास्ते को समतल कर सकते हैं और संकरी नदी के ऊपर एक छोटा-सा मजबूत पुल बना सकते हैं।”

“तुमने बहुत समझदारी-भरी बात सोची, अब्दुल,” हेडमास्टर ने कहा और फिर उन्होंने अब्दुल की पीठ थपथपाई। “तुमने चुस्कित और उसकी समस्या के बारे में कैसे सोचा?”

“सर, पिछले हफ्ते हमने सामाजिक अध्ययन की क्लास में नागरिकों के बुनियादी हकों के बारे में पढ़ा था। शिक्षा पाना हरेक बच्चे का हक है। अच्छी शिक्षा पाना चुस्कित का भी हक है, क्यों सर?”

“तुम बिल्कुल ठीक कह रहे हो अब्दुल। मैं इसके बारे में अन्य शिक्षकों से चर्चा करूंगा,” हेडमास्टर ने जवाब दिया।

“That’s very thoughtful of you, Abdul,” said the Headmaster as he patted him on the back. “What made you think of Chuskit and her problems?”

“Azhang-ley, last week we read about the fundamental rights of citizens in our civics class. All children have a Right to Education. That includes Chuskit as well, does it not?”



अगले दिन हेडमास्टर ने सारे शिक्षकों की मीटिंग बुलाई। उन्होंने सबको अब्दुल की बात बताई और शिक्षकों की राय जाननी चाही।



“असंभव,” एक शिक्षक ने तपाक से कहा।

“हम स्कूल में किसी अपंग बच्ची को कैसे दाखिल कर सकते हैं? वह अन्य बच्चों की तरह कैसे लिख और खेल पाएगी? वह कैसे शौचालय जा पाएगी?”



“इसी समस्या को तो हमें सुलझाना है,” हेडमास्टर ने कहा। “मैंने सुना है कि मेंटॉक-युल गांव की शिक्षा समिति ने वहां के अपंग बच्चों के लिए स्कूल में एक विशेष शौचालय बनाया है। हम उसके बारे में और अधिक जानकारी हासिल कर सकते हैं। पर उससे पहले हमें चुस्कट को स्कूल में लाना होगा। वह स्कूल में क्या पढ़ेगी, कैसे पढ़ेगी, इसके बारे में हम बाद में चर्चा कर सकते हैं।”

“Yes, you are right, Abdul. Let me discuss this with the other teachers,” replied the Headmaster.



The next day the Headmaster called all the teachers to a meeting. He shared Abdul's ideas with the group and asked the teacher's what they felt.

“Impossible!” said one of them.

“How can we have a disabled child in our school? How will she be able to write, play and go to the toilet like the other children do?”

“That's exactly what we have to work out,” said the Headmaster. “I hear that in the village of Mentok Yul, the Village Education Committee has helped build a special toilet for one of the disabled children. We could ask them what they have done. But first we will have to get Chuskit to school. Then we could think of ways to helping her do things in school.”





दो हफ्ते बाद सरकारी स्कूल में काफी चहल-पहल नजर आई। सारे बच्चे बाहर खेल के मैदान में जमा हुए। आज वह स्कूल में अपना बस्ता नहीं लाए थे। आज कोई पढ़ाई की क्लास भी नहीं लगनी थी!

Two weeks later there was great excitement at the Government School. All the children had gathered outside in the playground. They had come to school without their school bags: there were going to be no classes today!



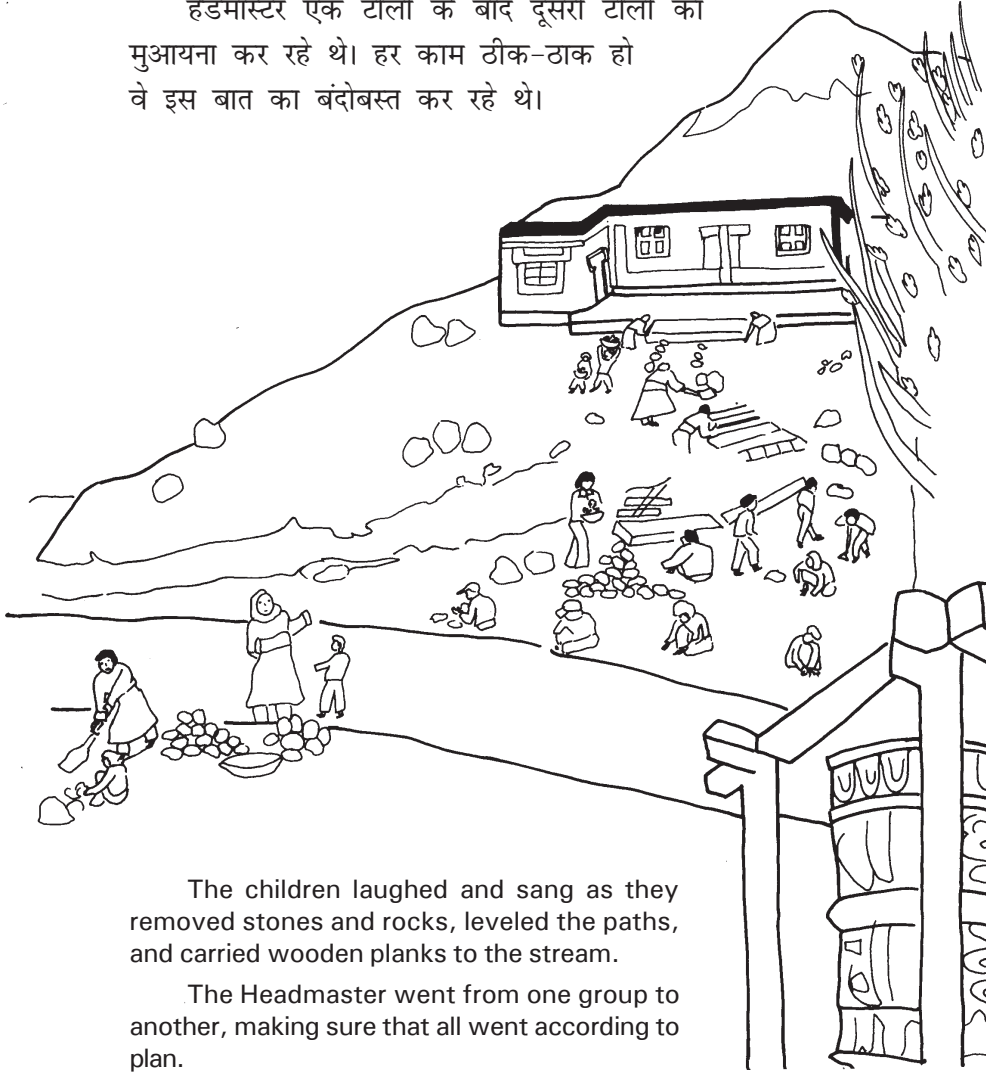
शिक्षकों ने बच्चों को अलग-अलग टोलियों में बांटा। एक टोली चुस्किट के घर के सामने काम कर रही थी और दूसरी नदी के किनारे वाली पगडंडी पर। बड़े बच्चों की एक टोली नदी के ऊपर लकड़ी का एक मजबूत पुल बनाने में शिक्षकों की मदद कर रही थी।

The teachers divided the children into groups. One group worked in front of Chuskit's house and another on the path down the stream. A third group with some of the older children worked hard to help some of their teachers build a strong wooden bridge across the stream.



पत्थर और रोड़े उठाते हुए बच्चे गाने गा रहे थे और खिलखिला कर हंस रहे थे। वे पगडंडी को समतल बना रहे थे और नदी की ओर लकड़ी के तख्ते ले जा रहे थे।

हेडमास्टर एक टोली के बाद दूसरी टोली का मुआयना कर रहे थे। हर काम ठीक-ठाक हो वे इस बात का बंदोबस्त कर रहे थे।



The children laughed and sang as they removed stones and rocks, leveled the paths, and carried wooden planks to the stream.

The Headmaster went from one group to another, making sure that all went according to plan.



चुस्कट के माता-पिता ने सबको गरमा-गरम चाय और बिस्किट दिए। चुस्कट के दादाजी नदी किनारे लगे मजनु के पेड़ के नीचे बैठकर काम करते बच्चों का नजारा देख रहे थे। “मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि कभी मैं ऐसा शुभ दिन देखूंगा!” उन्होंने सोचा और तभी उनकी आंख से आंसू लुढ़ककर गाल पर बह चले।

Chuskit's parents provided everyone with hot tea and biscuits. Chuskit's grandfather sat under a willow tree by the stream watching the busy school children. "I never dreamt I'd see a day like this!" he thought to himself as he wiped a tear that rolled down his cheek.

दिन भर कड़ी मेहनत करने के बाद थके-मांदे परंतु खुश बच्चे अपने-अपने घरों को लौटे। अब चुस्किट के घर से स्कूल तक का रास्ता बनकर तैयार हो चुका था।

At the end of the day it was a tired but happy group of children that returned to their homes. The path from Chuskit's home to the school was now ready!



चुस्कट अपने जीवन में पहली बार स्कूल जा रही थी। इसीलिए वह बेहद खुश थी और उसका मन उमंगों से झूम रहा था। □



Chuskit was going to school for the first time in her life. And that's why she was so excited! □



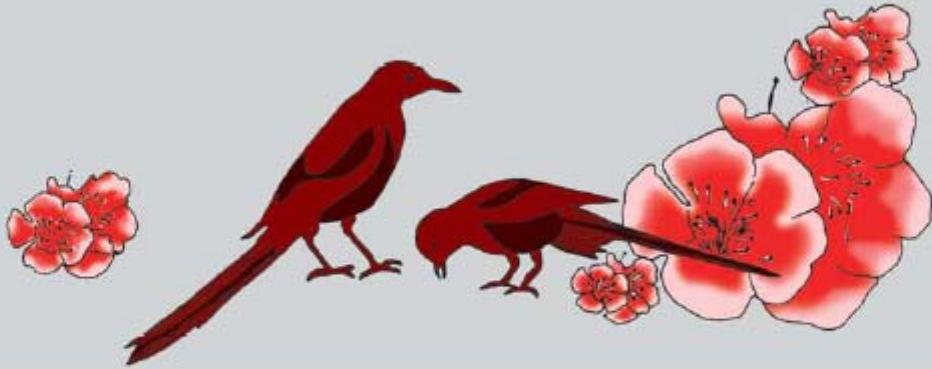


नव जनवाचन आंदोलन



नी बरस की चुस्कट स्कूल जाना चाहती है। वह स्कूल जाकर गणित सीखना और खेलना चाहती है। वह स्कूल में बहुत सारे दोस्त भी बनाना चाहती है। परंतु चुस्कट स्कूल नहीं जा पाई, क्योंकि वह चल नहीं सकती थी। लेकिन एक दिन अब्दुल ने इस समस्या का हल खोज ही निकाला। सच्ची घटना पर आधारित एक प्रेरक कहानी।

Nine year old Chuskit longed to go to school. In school she wanted to make friends, learn maths and play games. But being on a wheelchair she was unable to do so. But one day Abdul decided to do something about it. An inspiring true real life story.



भारत ज्ञान विज्ञान समिति